19E
80-20

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत पारंगत (एम्.ए.) बहिःस्थ

परीक्षा: जानेवारी – २०२३

सत्र ३ रे

विषय: दर्शने – २ (अर्थसंग्रह) (19E3302)

दिनांक: ०६/०१/२०२३ **गुण : ८०** **वेळ : स. १०.०० ते १.००**

सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) पञ्च प्रश्नान् उत्तरत।

प्र.१. कानिचन पञ्च वाक्यानि स्पष्टीकुरुत। **(२५)**

१. कर्मस्वरूपपात्रबोधको विधिः उत्पत्तिविधिः।
२. वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः।
३. नामधेयत्वं च निमित्तचतुष्टयात्।
४. प्रयोगसमवेतार्थस्मारका मन्त्राः।
५. तच्च फलस्वाम्यं तस्यैव योऽधिकारविशिष्टः।
६. सेयं पर्णता अनारभ्याधीतापि सर्वप्रकृतिष्वेवान्वेति।
७. यत्र प्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयः सोऽर्थक्रमः।
८. अप्राप्तस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः।

प्र.२. अर्थसंग्रहमनुसृत्य भावनाविचारं स्पष्टीकुरुत। **(२०)**

अथवा

विनियोगविधिं संपूर्णतया स्पष्टीकुरुत।

प्र.३. तिस्रः टिप्पणीः लिखत। **(२०)**

१. अधिकारविधिः
२. निषेधमीमांसा
३. नामधेयवाक्यानि
४. अर्थवादः
५. विशिष्टविधिः

प्र.४. पञ्च रिक्तस्थानानि पूरयत। **(०५)**

१. शब्दसामर्थ्यं .....।
२. ..... प्रकरणम्।
३. यत्र समग्राङ्गोपदेशः सा .....।
४. ..... वाक्यं वेदः।
५. अज्ञातार्थज्ञापको ..... विधिः।
६. विधिः.....।
७. तत्र क्रमपरवचनं .....।
८. कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिः.....।